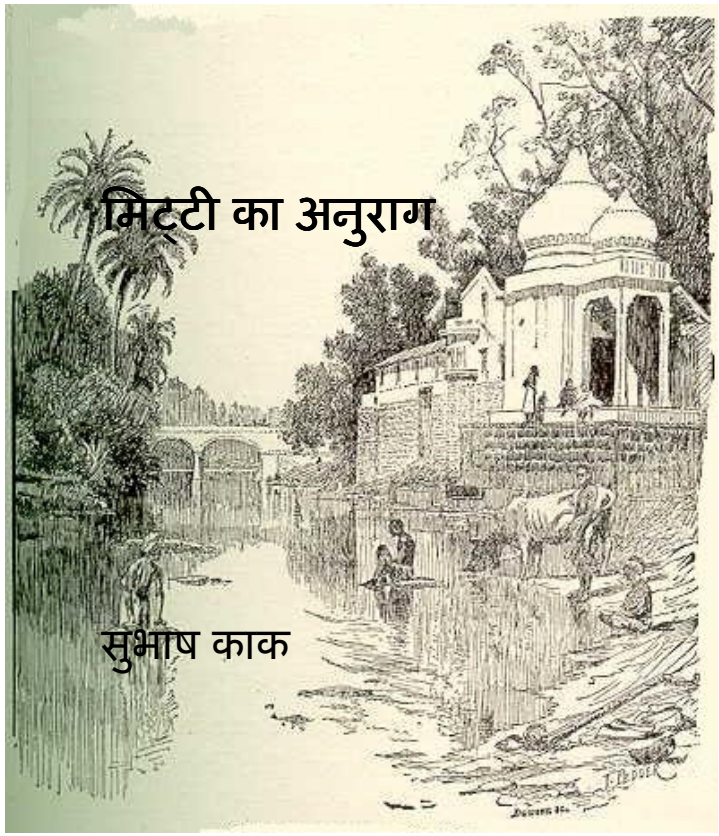
मिट्टी का अनुराग
सुभाष काक

यह संस्करण अलकनन्दा प्रकाशन, देहरादून, भारत से प्रकाशित हुआ।

© सुभाष काक, 2007

बिन कहानी
जो बतायेंगे
धरा में
कितनी गर्मी है।

उस फटे आकाश में
न मृत्यु थी
न पानी
घर से पहुंचकर
दूर
एक आलोक में थे
जहां से वापस निकलकर
आना मना है।

सोता चरागाह

दोपहर की
तपतपाती धूप में,
सोते चरागाह में,
जन्तु
पेड की छाया में
फैले हुए थे,
मधुमक्खियां ही
तल्लीन थीं
फूलों के ऊपर।

सामान्यता का रेशमी आवरण
ढके था
इन्द्रियों को
भ्रमों से।

उस तपन में
चाह उठी
निशब्दता की
पत्थरों की

प्राग्वाच

इस कविता संग्रह में पुरानी और नई दोनों कविताएं हैं।

विस्मृति की प्रतिगूंज
सुनकर
सम्मोहित।

काल की
सूजन दी देखी है
हमने अभी,
अतीत भविष्य को
गर्भे समेटे,
प्रस्फुटित
हुआ नहीं।

इसका जन्म
मायावी होगा
इसका शोषण है
स्मृतिधारा
ऊर्जा है
स्वरों की झंकार।

पर यह यायावर मन
इन्द्रजाल की
भूलभुलैया में
भटक गया

सूची

1. अंगारों का रास्ता 9

2. अनुराग और द्वेष 11

3. अश्वताल 13

4. इतिहास पुराण 15

5. एक और युद्ध 17

6. पत्ते और भाव 18

7. प्रेम का संकेत 20

8. पशु विदाई 21

9. रंग अँधेरे में 23

10. श्वेत फूल 25

11.एक सहेली 26

12. ग्रहण 27

13. चन्द्रमा 28
14. जंगल में आग 29
15. नगर 31
16. नयनों का कोना 32
17. संवाद 33
18. सीमा पार 34
19. मृतक नायक 36
20. हिमालय प्रयाण 46
21. धागे 50
22. एक ताल, एक दर्पण 53
23. मन्दिर की सीढियां 66
24. डरा पक्षी 69
25. मिट्टी का अनुराग 71
26. विस्मृति 73
27. सोता चरागाह 76

विस्मृति

क्योंकि विस्मृत हैं हम,
नया जन्म नहीं
हो सकता हमारा।
बंधे हैं हम
अतीत में,
अन्धे समान।

चिह्नप्राप्ति
जीवन का लक्ष्य
एकमात्र --
भक्ति,
याचना,
योग।
आतुरता,
पूर्ण होकर पीडा की,
मधु को चखकर
विष पीने की।

उनसे जुडी हुई
मैंने भी कई कथानक बुने।

पर अन्य देशों की भी
अपनी कहानियां हैं
सुन्दर घाटियां
पर्वतीय नदियां
सुन्दरियां।

अन्तर शायद है
बचपन में
मैंने देश की
मिट्टी खाई।

यह देश मोह नहीं
मिट्टी का अनुराग है।

अंगारों का रास्ता

आग से आग के वीथि पर
अंगारे बिखरे हैं।
समय थोड़ा है
तलवों के छालों की
पीड़ा से परे हम
भ्रांति की ओर
बढ़ गए।

हम जानते हैं
आकांक्षा है जीवन विधान।
ज्ञानी चुप हैं
और देवता सो रहे
आराधित होने के संतोष में।

दर्शन और मीमांसा
कुछ स्पष्ट नहीं करते

केवल भाव हैं हमारे पास
तो हम क्यों न
ओंठ से ओंठ मिलाएँ।

मृत्यु हर दिन होती है
तो महाप्रयाण का
क्या भय?

मिट्टी का अनुराग

देश प्रेम कहां से उभरता है?
हमारे कूचे कीचड वाले थे
और भय था
बाजार के गुंडे
पीट न लें।
चुप रहना सीखा
अज्ञात भीड में
पिघल जाना।

यह सच है --
पतझड की हवाएं
तीखी और सुहावनी थीं
और नदी के पास
उपवन में भागना
पहाडी से लुढकना
आनन्दमयी था।

पुरखों की कहानियां
रोमांचित थीं

नल की फुहार बनी
उस की बरसात अब
सुदूर भूले देश में
रिमझिम पानी गिर रहा।

अनुराग और द्वेष

मैं तुमसे अब प्रेम नहीं करता
यह सच है,
भले ही मुझे तुम्हारी याद
आती है।

मुझे तुमसे द्वेष है अब,
यद्यपि यह द्वेष
प्रेम का चिह्न है।

जो मैं तुम्हें
चाहता नहीं,
तुम भी मुझे
भूल गई।

मुझे तुमसे प्रेम था,
और कदाचित
तुम्हें भी कभी
मुझसे प्रेम था।
पर तुमने मेरा नाम
अपने हृदय से

मिटा दिया,
मैं भी दूर देश
तुम्हारा अपवाद
करता हूँ।

परंतु यदि तुम्हारी दृष्टि
वाटिका के दूर कोने में
उस पेड़ पर पहुँचकर
जो मैंने बोया था
स्मृति को जगाए
और तुम मेरा नाम लो
मैं तत्काल चला आऊँगा।

डरा पक्षी

कांपते, रात के तूफान में
बिजली की चौंध में
नष्ट नीड देख कर
वह लौटा घर निराश।

विश्व सिकुड गया था तब
कोई दूसरा नहीं
जो अपने जैसा रहा।
नहीं ढूंढना अब कोई।

भूमि बहुत अलग सी थी
रेत थी मकान थे
ध्रुव ऋतु समान सी
न धूप थी न चांदनी।

खिडकी में जब देखता
बन्धु उछल रहे
पंख भरते उडान
यह दृश्य गोच कर।

चान्द की कितनी
समदृष्टि है।
१३
नववर्ष के उत्सव के लिये
मेरे पास नव वस्त्र कहां?
१४
ओठ ठिठुरते हैं
इन हवाओं में।

अश्वताल

चिदंबरम का तेज
गर्मी की भाप से
धुँधला गया है।

राख में लिपटे
चूल्हे के अंगारों में
कम जान है।

खिड़की के बाहर
नाले की पुलिया की
नींव टूटी लगती है।

और उसका रास्ता
किस गांव जाता है
अब मुझे ज्ञात नहीं।

नहीं मुझे याद है
कैसे मैं आया
इस महालय में।

वेदना आशा देती है।
संदेश है
आश्विनों के एक
प्राचीन क्रम का।

अश्वताल में शरीर
भिषज को सौंपे
मैं दर्पण में ज्योति को
टिकटिका देख रहा हूँ।

मैं फूलों को
चुनना नही चाहता
पर घर कैसे लौटूं
चुने बिना।

८

पता नहीं किन फूलों की
सुरभि फैल गई
आंगन में।

९

बादल कभी कभी
चान्द को ढक लेते हैं
ताकि हमारी निहारती आंखें
थक न जाएं।

१०

देखो इस पत्ते से गिरका
जलबिन्दु
कैसे विभाजित हुआ।

११

पपीहे की चीख सुनकर
मुझे स्वर्गवासी दादा की
याद आई।

१२

मन्दिर की सीढियां

१
मेरे समछाया के आंगन में
पपीहे ने पहला गान किया।
२
मालूम नहीं कहां से यह गीत
धरती पर गिर आया।
३
मचान से देखते
बाघ कितना सुन्दर लगता है।
४
तितली मेरे हाथों में
देखते देखते मर गयी।
५
देखो! पर्वत
कम्बल के नीचे सोया है।
६
पुष्प खिले
दूसरे दिन
हिमपात हुआ।
७

इतिहास पुराण

इतिहास पुराण के भीतर
छिपा है
पुराण इतिहास में।

पुराण वेदना का नामरूप
भीतर का संघर्ष-
जो कर्म नहीं हो पाए
उन पर टीका है,
क्योंकि देवता आलसी हैं।

राक्षसों के पास
वासना है,
प्रेम नहीं
मित्रता नहीं
महत्वाकांक्षा है,
धार्मिक उन्माद है।
वह उपनिवेश
और साम्राज्य
माँगते हैं।

देवता श्रम नहीं करते,
संस्कृति का निर्माण नहीं करते।

अन्याय और अत्याचार
का झंझावात
चेतना को
झकझोरता है।
काली आँधियाँ चलती हैं।
संस्कृति उस को
बाँधने का जाल,
नीलकंठ की तरह
विष पी लेने का
न्याय।

इतिहास को
पुराण के परिवेश में देखिए।

रात अंधेरे के तम्बू में
छिप गया ताल
पर हंस का स्वर
कोमल और श्वेत है।

६७
कारागार के आंगन में भी
पुष्प खिले।
६८
मैं थक गया
क्या नींद में भी
पुष्प खिलेंगे।
६९
पूजा करते
पुष्प मुर्झाए।
७०
कोमल फूलों पर
वर्षा मूसल सी गिर रही।
७१
शरद की चांदनी में
मेरा बालक
गोद नहीं।
७२
पडोसी की ऊंची दीवार
न वह देखे नदी
न दूर पहाडी।
७३

एक और युद्ध

क्योंकि वह रक्षा न कर सका
युद्ध में पराजय हुआ
प्रेमिका के हृदय में
वह अब अपमान पात्र है।

जो पुरानी स्मृतियाँ थीं उनकी
पेड़ के नीचे बातें
उद्यान में टहलना
पर्वत के छोटे पथ पर
घोडों पर भ्रमण
अब वह झूठ हैं।
वह झूठ था।

प्रेमी को
धिक्कार रही है वह।
क्या चाहती है,
एक और युद्ध?

पत्ते और भाव

पेड़ के शब्द पत्ते
और मुस्कान
फूल हैं।

शब्दों से अन्य पेड़
बँधते हैं,
पक्षी और तितलियाँ
सुनती हैं इन्हें।

हमारे भाव
पत्ते हैं
प्रफुल्लित हो जाते हैं कभी।

सिकुड़ते और मुर्झाते भी हैं
चिनार के लाल
पत्तों की तरह।

धरती पर गिरकर
समेटे जाते,
सुलगाकर उनके अंगारों से
गर्मी मिलती है

हारे।

६१

तूफान के शोर में भी
चिडिया की पुकार आई।

६२

सर्दी की फुहार
मझे मिलने से पहले
फुलवारी हो आई।

६३

भुर्जतरु भीषण वर्षा में
सोए पडे।

६४

पपीहा कूक करे
पर कोई न आया।

६५

शाम हो चली
मेरी बेटी
चुपचाप रसोई में
खाना खा रही।

६६

कमल सुन्दर है
पर नाविक बहरा।

सुन्दर लगते हैं।
५६
खण्डहर में मैंने
कई फूल उगते पाए।
५७
रुई का फेरीवाला
गर्मी से पीडित।
५८
मेंढक पत्ते बैठ
कुल्या को पार किया।
५९
यदि पपीहा पौधा होता
लोग गीत काट लेते
रेशमी रुमालों
और पन्नों बीच
सुखाने के लिए।
६०
आज भी
सूर्यास्त हुआ
फुलवारी में
बेचारे तारे
शरद के चांद से

अंजान लोगों को
ठिठुरती सरदी में।

प्रेम का संकेत

मेरा तुम्हारे लिए अनुराग
एक वस्तु की इच्छा नहीं
एक छाया को देखने की अभिलाषा है
जो शरीर और आत्मा
के बीच है।

रहस्य का उद्घाटन है यह
क्योंकि इसके अंत में
न मैं मैं हूँ
न तुम तुम हो।

जहाँ पहुँचकर यदि तुम द्वार
खटकाओ
मैं न सुन पाऊँगा।

४९
उपवन में प्रत्येक पेड
का अपना नाम है।
५०
पतङ्ग धरती गिरा
निरीक्षण से जाना
आत्मा नहीं।
५१
मधुमक्खी बार बार
देवता की मूर्ति पर
वार कर रही।
५२
कितने मूर्ख हैं जो
इशारों का दाम करते हैं।
५३
गंगा की लहरों पर
चांद चित्र बना रहा।
५४
पक्षी हंस रहे
कि हमारे पास समय नहीं।
५५
चांदनी में सब वस्त्र

४३
नाग जल निर्मल है
पांव कैसे धोऊं।
४४
अनजान कि वसन्त जा रहा
तितली घास पर सोई।
४५
वह पास से निकला
पर सवेरे के कुहरे में
उसे पहचान न सका।
४६
हरिण स्तम्भित हुआ
उछलते बाघ की
भीषण सुन्दरता देख।
४७
आतिशबाज़ी बाद
दर्शक लौटे
अब वीराना है।
४८
मकडे जाल से
तितलियों के पंख
लटक रहे।

पशु विदाई

पशु की एक दृष्टि
कितना कह सकती है?

जिसके साथी
बीच-बीच में
लुप्त हो जाते हैं
वह क्या सोचता है
जगत का विधान क्या है?

बहुत क्रंदन होता है
बलि के पूर्व
जीवन दान की याचना
विधिवत है।
उस रोने को
हम भूल जाते हैं।
वह भूलना भी
विधिवत है।

पिपासे, व्याकुल प्राणी,
उर्वर समय की प्रतीक्षा
नहीं कर सकते।

इस काल संघात से
इंद्रियाँ जब
दुर्बल होती हैं
तब पशु से विदाई
सह्य हो जाती है।

३७
सुन्दरता क्या निहारूं
वसन्त के पग
निरन्तर दूर हो रहे।
३८
कौवे शोर मचा रहे
कि कोकिला को सुन न पाएं।
३९
मां कि गोद में सुरक्षित
भिखारी बच्चे को क्या मालूम
ठंड कितनी है।
४०
चिडिया घोंसला बनाए
पेड पर, कैसे बताएं
पेड कटने वाला है।
४१
उदास लगे पिंजरे का पक्षी
जब तितली देखे।
४२
जुगनू रोशनी दें
बच्चों को
जो उन्हें पकडें।

शरद चन्द्रमा
पर हमारी खिडकियां बन्द हैं।
३१
अरुषी बहुत रोई
पूर्ण चन्द्रमा के लिये।
३२
तूफान के झोंके पर बैठी
मन्दिर की घण्टी की आवाज़
चली आई।
३३
बिन जाने कैसे समझूं
ग्रन्थ मैं लौटाता हूं।
३४
पतंग पर किरणें हैं
जब ताल पर अंधेरा आ चुका।
३५
तूफान में कुत्ते
गिरते पत्तों पर भौंक रहे।
३६
प्रकाश
बिम्ब बिम्ब का प्रतिरूप
रूप रूप का प्रतिबिम्ब।

रंग अँधेरे में

क्या वसंत का
नृत्य इतना सुंदर है,
कि तुम इसके रंग
रात में भी
बता सकती हो?

क्या तुम
मिट्टी की गंध
वापस बुला सकते हो?

जंगल में पेड़ों की भास
इतनी मादक है
मुझे भय है
मैं अगला श्वास लेना भूल न जाऊँ।

वसंत के रंग
पहाड़ियों के मध्य
घाटी में फैल गए।
आकाश की तनी हुई चादर

की थरथराहट
से मेरा शरीर काँप उठा।

हृदय जिसने
प्रेम किया है
भूल नहीं सकता।

अब पुष्प नहीं खिलेंगे।
२५
काश गिरती बर्फ पर
तितलियां मंडरातीं
कैसा गातीं वह।
२६
चोर ने हार चुराया
पर चन्द्रमा मेरी खिडकी के बाहर
से नहीं भागा।
२७
मछलियां
गिरते फूलों के डर से
चट्टान नीचे छिप गईं।
२८
श्मशान में
बहुतेरी सुन्दरियों की अस्थियां हैं।
२९
गर्मी की रात
पिंजरे का कोई पक्षी
नहीं सोया।
३०
सुन्दर है

१८
विशैले छत्रक
सुन्दर लगते हैं।
१९
पक्षी की कूक सुनकर
जल में चन्द्रमा हिला।
२०
चन्द्रमा दौड रहा
एक मेघ से दूसरी ओर।
२१
अरुषी ने ओस के बिन्दु को
अंगुली में पकडना चाहा।
२२
सुन्दर है
पतझड की शाम का चन्द्र
जीवन की शाम में।
२३
तितलियां इधर उधर भाग रहीं
बीते वसन्त को ढूंढतीं।

२४
पाला और भीषण पडा

श्वेत फूल

बचपन के आँगन के
श्वेत फूल
मैं भूल गया,
जब से गाँव छोड़ा
वैसे पौधे नहीं देखे।

प्रातः कल
अमेरिका की एक नई बस्ती में
जहाँ मैं खो गया था
गाड़ी की खिड़की से
मैंने वैसे ही
श्वेत फूल
एक घर के पास पाए

एक लड़का उस उद्यान में
खेल रहा था।
जैसे स्वप्न में
डूबा हो।

एक सहेली

एक सहेली एक पहेली
शब्द खेल चित्त मेल
प्रश्न स्पर्श विमर्श

बिंब एक स्मृति
प्रतिबिंब एक सीख

तुम जीती मैं हारा
एक वीथी एक सहारा।

१२
डाकू साधूवेश में हैं
कवि ने
तलवार बान्धी है।
१३
मैं हंस से खेलने चला
पर उसकी उडान से
डर गया।

१४
चिडियाघर के पिंजरे
का भालू
मुझे भाई लगा।
१५
दर्पण में बिम्ब
धुंधलाता है।
१६
इस रात देर
मेरा साथ कौन जगा है?
१७
मैना ऐसे गाये
जैसे पिंजरे में है ही नहीं।

देखो पीपल का धैर्य।

६

लगता है तरबूज़ को नहीं मालूम
रात तूफान आया।

७

चांद को देखते देखते
मेरी गर्दन दुखाई।

८

वसन्त का पहला गीत गाते
पक्षी शर्मीला लगता है।

९

कितने तीर्थ जाकर
आकाश गंगा
उतनी ही दूर।

१०

यात्रयों के साथ
पक्षी भी डेरा डाले।

११

पुरुष बैठे करे ध्यान--
कठोर परिश्रम।

ग्रहण

ग्रहण के छादन में
पक्षी शाखाओं में छिप गए।
मानव चाय के प्याले पीते
चहचहाते रहे
संस्कृति सिखाती है कि
भयानक की चर्चा न हो।

जिस के लिए शब्द न हों उस की स्थिति नहीं।

अबोध बालक ने रिक्त सूर्य को घूरा।
प्रौढ़ काच लेकर उसका प्रतिमान
काग़ज़ पर देखने लगे।
हमने उस में जादू पाया
भय और अंधी आशा।

याद आया
शुक्र का सूर्य में तिरोधन
और उसके पार गमन।

चन्द्रमा

चन्द्रमा को केवल देखिए नहीं
नीचे ले आइए।

इसकी आकृति
अपने साथ रखिए
थैली में,
गोल पैसे की तरह।

इसे काटिए
बाँटिए।

इसे दो बनाकर
आँखों पे रखिए
सुख चैन के लिए।

एक ताल, एक दर्पण

१
जैसे फूल की गिरती पंखडी
शाखा को लौटे
ऐसी थी तितली की उडान।
२
शरद की झंझानिल में
व्याघ्र और हरिण
साथ ठिठुरे।
३
मध्याह्न की गर्मी में
जल से भाप उठी,
पुराना संगीत
कान में गूंजा --
ताल ही दर्पण है।
४
झांझा अति पीडित
तितली नहीं बनेगा।
५
फुलवारी के शृंगार
और पक्षियों के कोलाहल के मध्य

उस शाम को व्रत है
पर सूअर की आत्मा के बजाय
मेरे विचार भटकते हैं
और रुकते हैं आनन्द की पुत्री पर
मेरे मन्दिर पर षोडशी उपासिका
वह स्पर्श से स्फटिकमय है,
अतः मैं उसे रहस्य बतलाता हूं
अस्तित्व और शून्यता का।

मेरी चाह इतनी है
कि चाह ही इसकी पूर्ति है।

(१९७७)

जंगल में आग

जंगल के बीच
लहराते वृक्षों को देख
आभास हुआ
हम ही
वह बहती समीर थे।

हम चुप रहे
जब घुडसवार वहाँ पहुँचे
आग लगाने,
एक बस्ती बसाने।

हृदय स्तब्ध था,
क्योंकि हृदय रहस्यपात्र है
इस की भाषा नहीं।
और अरण्य ग्राम के सामने
हटता है।

पक्षी और पतंगें
आग के तूफ़ान में
वृक्षों के तांडवीय नृत्य

में झूल रहे थे,
आहुति बनकर।

पथिकों को कहती सी
मैं अकेली हूं
दूरबोध से।
क्या मैंने सही सुना
चाय के अवशेष परखूं
चित्र दर्पण मे देखूं
छाया मापूं
लाख का मन्त्र पाठ
रोम पर करूं?
हां वह कामुक है
पर शीघ्र ऊब जायेगी।

एक निःशब्द चीख झंझोटती है
गांव के सूअर का प्रेत
धुंध में घुलता सा दीखता है।
दौडता हूं कसाईक्षेत्र
और सूअर वहां है लकडी समान
पांव बंधे, मुंह दबा
उसकी चीखें आकाश फाडती,
चार लंगोटित लोग बहरे हैं
छुरी पैना रहे यह
घर के लिये मांस चाहते।

धागे

जब अनुभूति तर्क में बन्धे
निर्भाव की पीडा
डुबोती है
निर्भाव उपहासते हैं
अवयव जलते हैं
कोशिकाएं पिघलती हैं
अम्ल में।

हा क्या जलना था
अपनी ही आग में?

प्रश्न का उत्तर
दूसरे प्रश्न में है।

वही स्वप्न आये हैं,
दस वर्ष
वही बिम्ब बैठे,
वही भय दबाये,
निर्वाण कैसे हो?

योगिनी छज्जे पर बैठी

नगर

नगर एक कारागार है।
जो धरती पर राज करे
पहले एक माली बने।

मुझे अब याद नहीं
कि मैंने यह पौधे बोए।

पुस्तक जेब में एक उद्यान है।
प्रकृति में प्रत्येक वस्तु
एक जाल में बँधी है।

फूल भी अतिथि से
मिलने को आतुर हैं।

नयनों का कोना

कई स्थान हैं
जहाँ मैं कभी नहीं पहुँचा
जिनकी कल्पना भी नहीं की
पर यह जानता हूँ
एक अनजान स्थान जाना है।

ऐसा एक क्षेत्र
तुम्हारे नयनों का वह कोना है
जहाँ भविष्य के लिए
संकेत हैं।

तुम स्वयं नहीं जानती
इस रहस्य को -
नयनों पर
जो लिखा है,
उसे तुम नहीं
पढ़ सकती।

हम आप है।

(१९७७)

कढी, ओषधी और धुआं
क्यों वह मिटा लें, जो था?
और शिविर मृदु श्वास ले रहा
क्या तुम अन्धेरे का रिरियाना सुन रहे हो
और बालों का त्वचा में अंकुरण?

जैसे रात्रि मीठे से अपनी चादर बना रही
न ऋक्ष और नाहीं भयावक शब्द
शरीर शान्त धरती पर लेटा हुआ,
क्यों मन तब आग्रही मांगता है नई यात्रा
उन पथ पर जहां हम पहले चले थे?
आग और वात
आप और मिट्टी
बहुत हैं हिमालय पर
परन्तु मन दौडता है प्राचीन छायाओं साथ,
विद्यालय और पिता
मित्र और माता
गाडी और वस्त्र,
और पहुचता है पर्वतीय आश्रम।

यह सचमुच व्यर्थ है,
हम आप हैं

संवाद

आकाश और पृथ्वी का संवाद
नैतिक प्रश्नों के परे है।

स्वर्ग और नरक का मेल
पुष्प के खिलने के क्षण
में है आधारित।

स्वर्ग एक फुलवारी
जिस में प्रत्येक पुष्प
प्रफुल्लित है
और एक नए फूल
के लिए स्थान।

सीमा पार

तब समय की एक अलग
धड़कन थी।

पगडंडी पहाड़ के पार
एक घाटी में आई।

झूमते
विशाल वृक्षों के नीचे
जहाँ खुला स्थान था,
और घूमता झरना था।

अब यह नगर है।
विशाल भवनों के मध्य
पर्यटकों के लिए
एक छोटी धारा है।
पर गगनचुंबी महालय
हवा में लहराते नहीं।

स्तब्धता है
समय के ताल में अब
एक व्याकुलता।

ऋतु में जादू हैः
जडें पकडे खींच रहीं मिट्टी
जुड गईं चीडशंकु, अविलीद और बिच्छुओं के साथ
ढाल पर फिसलती हुईं।
क्यों जल जोडता है और गिराता है
शक्ति देता है आत्महत्या के पथ पर,
क्यों वात सुखाती है और जमाती,
सूर्य गरमाता है और जलाता,
पृथिवी सहारती है और दबाती,
क्यों तत्त्वसंकर बढता जाता है?
तथापि नये रूप आते हुए चिल्ला रहे
इस पंकिल रक्ती वसन्त में --
उनके शोकगीत कौन गायेगा
उनके घर हिमक्षेत्र में खोदेगा
जंगल के मैदान में आग बनाएगा?

पहाडी पर प्रकाश बिन्दु तारा नहीं
चरवाहा और पत्नी बात कर रहे है
यादें बांटते हुए
दोनों सौ दिन की गन्ध ओढे हुए हैं
माखन, स्वेद, मूत्र, अन्य रस
धरती का आर्द्र

पर्वत नदी को
इसके फेन को चूमा
इससे पीठ को रगडा
और मित्र के साथ मुक्त पाया
इस विशाल स्नानशाला में?
कितनी रुक-रुक के
गर्मी वापस आए
और जब यह फैले
और हम फिर केवल नाम हैं,
समय लौट आया
पर्वत की पट्टी को चढने का।
मेघ के उतरने के बाद
वर्षा का कडक से गिरना
टट्टू काम्प रहे
उनकी उदास विशाल आंखें अन्दर देख रहीं
और एक भूरा चूहा रास्ता सूंघ रहा
अपने जल-भरे बिल की ओर
क्या यह बन्धु पायेगा
या इसे उन्हें ढूंढने
नदी तट जाना होगा?

मन क्षोभ और भय के बीच
खिंच रहा है।

मृतक नायक

१
मैं वह नही जो दीखता हूं
मैं स्वयं ही भूत हूं।

जब मैं निर्जीव हुआ
मेरी आत्मा अस्वीकृत हुई
स्वर्ग और नरक को
लडखडाई वापिस तब
मेरे अस्थिपिञ्जर में।

२
हम सुन्दर हैं कि हम मर जाते हैं
जब समय की उडान रुकी
एक क्षण सहस्र वर्ष हुआ
मैं धूल था, एक विचार था
मेरी चाह थी कि शरीर होऊं
क्योंकि मैंने स्पर्श नही किया
भरपूर नहीं
और जब मेरा जमा हुआ शरीर पिघला
प्राणों की सरसराहट से,

अंगों में सुलगती आग
चिडियों का आलाप
घास ओस से नील हुई
पलकें फडफडाईं और मुस्कान
ठंडी हवा बीच उडती आई
चलो टीन गर्माएं
और फिर बाल संवारें।

क्या पर्वत बात करता है?
घुमाऊ पथ पर
खुले स्थान पर
पृथिवी की सूजन दीखती है
टूटी शिला के दान्त
यहां और वहां
और निचली ढाल की घास और चरीले से दूर
पर्वत का ध्यानमग्न मुखमण्डल
आंखें बन्द
उदात्त मस्तक, सीधी नाक
और वर्षा के बीच सुन पडता है
इसके वक्ष का धीमा शब्द।

क्या तुमने शरीर दिखाया है

हिमालय प्रयाण

याद हैं वह अंगारे
आग बुझने से बचती हुई
वात उछलती हुई जैसे उपेक्षित भूत
तम्बू के हाथी कान थपथपाते हुए
भूले मानचित्र
जल का सरल नाद
तुम और मैं
हमारी घनिष्ठता?

क्या आवारा बेचारा चले
चीड पेडों के बीच से
हमारे पुराने भाई मूर्तिमान
बहुत प्रतीक्षा की इन नें
उनकी याद सो रही है
जब वह जागेंगे
हम सो रहे होंगे,
याद करो।

सुबह जागी है आलसी

वह आनन्द था।

३
शब्द निःस्तब्धता से निकला
स्वतन्त्रता कारागार हो
पर नीरवता
नीरवता को नहीं भाती
हृदय के कांपने को नहीं भाती

पर सौन्दर्य कौन मांगता है
अतः मुझे गीत गाने दो
मुझे घण्टा बजाने दो।

४
मैं हर दिन मृत्यु को
प्रातराश के दूध की तरह पीता हूं
इस प्रभात को जब मैं जागा
श्वेत धूप के धब्बे मेरे कमरे में थे
मैंने रात के वस्त्र पलंग के आस-पास बिखरा दिये
चौकी पर थाल
सुरुचिपूर्ण संजोए थे
कमरे का उपस्कार
ठीक स्थान पर था

वैसे ही जैसे घर जो रुका हुआ है।

मैं प्रातराश खा न पाया।

५

पक्षी उड गये जब में पहुंचा
मैंने दाना हाथों में बटोरा
मेरा पास चाकू न था
पर पक्षी न आये
मेरे हाथ थक गये और गिरते दानों से
पौधे निकले
और श्वेत फूल
कमल भरपूर।

६

मुझे पीने दो
मुझे और पीने दो
जैसे मैं झुका चीत्कार हुआ
नेत्र उठे एक राक्षस देखा
अर्धनर, अर्धनारी
अपने ही वक्ष को पुचकारता हुआ
मैंने देखा कि नदी का पानी

उसके आग्रह पर
अपनी समझ के विपरीत
मैंने उसे बाहों में समेटा।

जब होंठ होंठ से मिले
वह पृथिवी पर ढेर हुई --
मेरी सांस ने
जान ले ली --
मैं पुनः प्रेम नहीं करूंगा।

(१९७३)

मैं मूर्च्छित हुआ।

आज मैं उनींदा हूं
अंग पीडित हैं
चाह से
कि अन्धेरा उतर आए।

९ कीडे

मैं जंगले पे खडा
अस्थियों को शरद् धूप में गरमा रहा
मेरी पलकों पर सूर्य किरणें
लाखों बारीक गोलों में बिखरीं
और फिर चींटियां चारों ओर रेंगने लगीं।

वह बहती आईं
मृत्यु की गन्ध जैसी
और कामनाओं को खा गईं।

जैसे मैं कार्यालय में बैठा प्रतीक्षित
वेश्या समान, याद कर रहा,
कितने श्मशान घाट मैंने देखे हैं,
कि वह आई।

राक्षस की हचकती छाती के साथ
उठ बैठ रहा,
मेरे हाथ का ताल भिन्न है
मैं केवल झाग उठा पाता हूं।

मुझे पीने दो
तो क्या यदि मांस पिघला है
और मेरे हाथों की अस्थियां
पकड नहीं पातीं
जो मैं देखता हूं
अन्धेरा है
चिकित्सा प्रयोगशाला में
मानचित्र जैसा हूं,
पर खोखला तो भरने दो।

७

अन्तिम वेनपक्षी
अग्नि की ओर उडा
जलने के लिये
राख में ढलने के लिये
उठने कि लिये
युवा और निष्पाप।

अग्नि के समीप पहुंचा ही था
आंखें बन्द अन्तिम छलांग सोचता
कि किसी ने कठोरता से खींच लिया --
पुनर्जन्म नहीं था यह --
एक व्यक्ति ने गला दबोचा था
दूसरे हाथ में छुरी थी उसके।

झट दो प्रहार से
उसने पंख काट दिये।

अन्तिम वेनपक्षी
अभी वहीं पडा है
अचल, भावशून्य
निर्जीव
पर मृत भी नहीं
प्राण आंखों में हैं
जो धीरे हिल रही हैं
आकाश की परीक्षा कर रही हैं

निकट आग
कब की बुझ गई।

८

मैं पूरी रात सोता हूं
पर आराम नहीं
पूरे दिन मेरा मन
उदासीन है
और मेरा शरीर
अपरिचित चाह से
अन्धेरे का आकांक्षी है।

कल रात मैंने ठानी
रहस्य को जानने की
घडी का घण्टी लगाई
दो बजे की
जब मैं उठा उस पहर
मैंने देखे पिशाच
मंडराते हुए
रक्त पी रहे।

मेरे हाथ अशक्त थे
सिर में अन्दर
खटखटाहट थी